प्राकृत व्याकरण

इकाई 1 समास

Q1 समास की परिभाषा एवं भेदों को सोदाहरण लिखें।

Ans- समसणं समासः अर्थात संक्षेप को समास कहते हैं अर्थात दो या दो से अधिक शब्दों को इस प्रकार साथ रखना, जिससे उनके आकार में कमी आ जाये और अर्थ प्रकट हो जाये। दूसरे शब्द रूप में परस्पर संबंध अर्थ वाले शब्दों का रूप में मिलना समास है।

समास के मुख्यतः चार भेद होते हैं-

(1) अव्ययीभाव समास (2) तत्पुरुष समास
(3) ~~बहुव्र~~ बहुव्रीहि समास (4) द्वन्द्व समास

(1) अव्ययीभाव समास → अव्ययीभाव समास में पहला पद बहुधा कोई अव्यय होता है और वही प्रधान होता है। अणुणयरं - नयरं - नयरंति।
पइदिणं - दिणं - दिणं ति।

(2) तत्पुरुष समास → जिसमें उत्तर पद की अर्थ की प्रधानता रहती है उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। जैसे - रायपुरिसो - रायणो पुरिसो इस शब्द में उत्तर पद "पुरुष" की प्रधानता है।

तत्पुरुष समास के आठ भेद हैं।

(1) प्रथमा तत्पुरुष समास - जब तत्पुरुष समास का प्रथम शब्द प्रथमा विभक्ति में हो तो उसे प्रथमा

तत्पुरुष समास कहते हैं। जैसे- कुलकायी- कुल कायस्स उत्तर - गामो-उत्तरं गमस्स

(II) द्वितीया तत्पुरुष समास → जब तत्पुरुष समास का प्रथम शब्द द्वितीय विभक्ति में हो तो उसे द्वितीय तत्पुरुष समास कहते हैं। जैसे - भद्दपत्तो- भद्दंपत्तो

(III) तृतीया तत्पुरुष समास → जब तत्पुरुष समास का प्रथम शब्द तृतीया विभक्ति में हो तो उसे तृतीया तत्पुरुष समास कहते हैं। जैसे - पंक-लित्तो - पंकेन लित्तो।

(IV) चतुर्थी तत्पुरुष समास → जब तत्पुरुष समास का प्रथम शब्द चतुर्थी विभक्ति में हो तो उसे चतुर्थी तत्पुरुष समास कहते हैं।
जैसे - लोकसुहो - लोकस्स सुहो

(V) पंचमी तत्पुरुष समास → जब तत्पुरुष का प्रथम शब्द पंचमी विभक्ति में हो तो पंचमी तत्पुरुष समास कहते हैं। जैसे - चोरभयं - चोरस्तो भयं।

(VI) षष्ठी तत्पुरुष समास → जब तत्पुरुष का पहला शब्द षष्ठी विभक्ति में हो तो उसे षष्ठी तत्पुरुष समास कहते हैं। - जैसे - धम्मपुत्तो - धम्मस्स पुत्तो।

(VII) सप्तमी तत्पुरुष समास → जब तत्पुरुष समास का पहला शब्द सप्तमी विभक्ति में हो तो उसे सप्तमी तत्पुरुष समास कहते हैं। जैसे - कलासु-सलो - कलासु कुसलो।

(VIII) अन्य तत्पुरुष समास → जब तत्पुरुष समास

को प्रथम शब्द न और दूसरा शब्द कोई संज्ञा और विशेषण हो तो इसे नञ तत्पुरुष समास कहते है। व्यंजन के पूर्व न 'अ' में और स्वर के पूर्व न अण में बदल जाता है। जैसे → अलोओस्म, 'लो लो' आदेवो न देवो अजीरो न गमण - पई सो।

(3) बहुव्रीहि समास → जब सभी पद किसी पद के विशेषण के रूप में आवे तब वहाँ बहुव्रीहि समास होता है। बहुव्रीहि समास छः प्रकार होता है।

बहुव्रीहि समास से छः भेद है।

(1) समानाधिकरण बहुव्रीहि समास → समास विग्रह में व्यवहार आने वाले ज (यत शब्द को द्वितीया आदि विभक्ति के भेद से है।

(11) व्याधिकरण बहुव्रीहि समास → प्रथमान्त षष्ठ्यन्त अथवा सप्तम्यन्त) जैसे - चक्कु पाणिर्जिम जस्स सो = चक्कपाणी (चक्र है हाथ मे जिसके ऐसा विष्णु है।

(111) उपमानपूर्वपद बहुव्रीहि समास → जिसका प्रथम पद उपमान हो यथा - हँसगमण इव गमणं जाए सो = हँस गमण

(iv) निषेधार्थक या नञ बहुव्रीहि समास → ण अत्थि णाहो जस्स सो = अणाहो।

(v) सहपूर्व पद बहुव्रीहि समास → जिसके पूर्व पद में सह अव्यय होता है। इस सह का तृतीयान्त पद के साथ समास होता है। इस सह के स्थान में स हो जाता है जैसे- पुत्ते पसह- सपुत्तो।

09

(ग) प्रादि बहुव्रीहि समास → प्र आदि उपसर्ग के साथ बहुव्रीहि समास → प्रगिट पुण्ज जन्स सो: प्रपुणजो जनो

(4) द्वन्द्व समास → प्रस्तुत समास में सभी पद प्रधान होते है। इसके विग्रह में दो या दो से अधिक संज्ञाएँ च या अथवा अ शब्द से जोड़ी जाती है।

द्वन्द्व समास के तीन भेद है।

(क) इतरेतरयोग द्वन्द्व समास → इसमें समस्त पद में बहुवचन होता है तथा इसके समस्त पद भी प्रधान होते है। जैसे - सुरा च असुरा च सुरासुरा

(ख) समाहार द्वन्द्व समास → प्रस्तुत समास में प्रयुक्त समस्त पदों से समूह का बोध होता है। इसी कारण समस्त पद में नपुंसक एकवचन का प्रयोग होता है।
जैसे - तवो च रंजमौ च स्हासो समाहारो तवस्रे जमं।

(ग) एकशेष द्वन्द्व समास → जब समस्त पदों से केवल एक पद ही शेष रहे, तब उसे एकशेष द्वन्द्व समास कहते है। जैसे - सास्रू च ससुरो च यति = ससुरा।